✺ 8 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] वाइसलेस बनना यह सबसे अच्छा कैरेक्टर है। तुम्हें नॉलेज मिलती है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस। बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने। वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं।

2] फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता? सारी दुनिया के बच्चों की जो आश है वह पूर्ण करते हैं। सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें। आत्मा को घर याद पड़ता है। आत्मा रावण राज्य में थक गई है। अंग्रेजी में भी कहते हैं ओ गॉड फादर, लिबरेट करो।

3] ज्ञान-विज्ञान की महिमा कितनी भारी है ! ज्ञान अर्थात सृष्टि चक्र की नॉलेज जो अभी तुम धारण करते हो। विज्ञान माना शान्तिधाम। ज्ञान से भी तुम परे जाते हो। ज्ञान में पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो।

4] भगवान् में तो ज्ञान-विज्ञान दोनों हैं। जो जैसा होता है, वैसा बनाते हैं। यह हैं बहुत सूक्ष्म बातें। ज्ञान से विज्ञान बहुत सूक्ष्म है। ज्ञान से भी परे जाना है। ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज़ होता है ना। विज्ञान सूक्ष्म है इसमें आवाज़ से परे शान्ति में जाना होता है। जिस शान्ति के लिए ही भटकते हैं।

5] यहाँ कोई जास्ती पढ़ाई तो है नहीं। सिर्फ अल्फ और बे को समझने लिए बुद्धि अच्छी चाहिए।

6] इस गोले में समझानी बहुत अच्छी है। यह वाइसलेस वर्ल्ड थी, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। अभी वो कहाँ गये? आत्मा तो विनाश होती नहीं, एक शरीर छोड़ दूसरो लेती है। देवी-देवताओं ने भी 84 जन्म लिये हैं। अभी तुम सयाने बने हो।

7] मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। 4 युग हैं, यह तो सब जानते हैं। यह है लीप युग। इस संगमयुग का किसको पता नहीं है, तुम जानते हो यह पुरूषोत्तम संगम युग है। मनुष्य शिव जयन्ती भी मनाते हैं परन्तु वह कब आये, क्या किया वह जानते नहीं। शिव जयन्ती के बाद है कृष्ण जयन्ती, फिर राम जयन्ती। जगत अम्बा, जगत पिता की जयन्ती तो कोई मनाते नहीं। सब नम्बरवार आहे हैं ना। अभी तुमको यह सारी नॉलेज मिलती है।

8] कमल आसन ब्राह्मर आत्माओं के श्रेष्ठ स्थिति की निशानी है। ऐसी कमल आसनधारी आत्मायें इस देहभान से स्वत: न्यारी रहती है। उन्हें शरीर का भान अपनी तरफ आकर्षित नहीं करता।

9] आपकी विशेषतायें वा गुण प्रभु प्रसाद हैं, उन्हें मेरा मानना ही देह-अभिमान है।

✺ योग-

1] कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से।

2] बाप का काम है परवरिश करना और प्यार करना। ऐसे बाप को जरूर याद करना है।

3] अल्फ और बे– यह याद करो, सभी को बताओ।

...2

❋ 8 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं।

2] उनको मन्त्र मिला हुआ है– बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। बाप ने तो बहुत सहज बात बताई है। अक्षर ही दो हैं– मनमनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो, इसमें सारा चक्र आ जाता है।

3] जैसे ब्रह्मा बाप को चलते फिरते फरिश्ता रूप वा देवता रूप सदा स्मृति में रहा। ऐसे **नेचुरल देही-अभिमानी स्थिति सदा रहे इसको कहते हैं देह-भान से न्यारे।** ऐसे देह-भान से न्यारे रहने वाले ही **परमात्म प्यारे** बन जाते हैं।

❋ सेवा-

1] एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी त्रिमूर्ति युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए।

2] कभी अपने मित्र सम्बन्धियों, सखियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है? बाप सुप्रीम देवी-देवता बनाने वाला है, बाप आप समान बाप नहीं बनाते। बाकी उनकी जो महिमा है, उसमें आपसमान बनाते हैं।

3] पहले तो बाप के साथ योग कैसे लगायें, यह भी सीखना पड़े क्योंकि यह बाप है अशरीरी, दूसरे तो कोई मानते ही नहीं।

4] सिर्फ एक बैज हो, उसमें भी सिर्फ त्रिमूर्ति का चित्र हो। जिस पर समझाना है कि बाप कैसे ब्रह्मा द्वारा पढ़ाई पढ़ाकर विष्णु समान बनाते हैं।

5] बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं। भल कोई दुकानदार हो वा क्या भी हो, पढ़ाई के लिए बहाना देना अच्छा नहीं लगता है। नहीं आते हैं तो उनसे पूछना है, तुम कितना बाप को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र फिराते हो? खाओ पियो, घूमो फिरो– उसकी कोई मना नहीं है। इसके लिए भी टाइम निकालो। औरों का भी कल्याण करना है। समझो कोई का कपड़े साफ करने का काम है, बहुत लोग आते हैं। भल मुसलमान है वा पारसी है, हिन्दू है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा भी तमोप्रधान है, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है। यह सारी दुनिया तमोप्रधान, पतित कलियुगी पुरानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए लक्ष्य है ना।